VOL. 5 | SPECIAL ISSUE 6| NOVEMBER - DECEMBER 2019

Impact Factor: 4.197 (IIJIF)

ISSN: 2454-5503

CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES (CHCS)

A BIMONTHLY REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL

Chief Editor
Dr Kalyan Gangarde
Director, Centre for Humanities and Cultural Studies

Executive Editor
Dr Grishma Khobragade
Asst. Prof., Birla College, Kalyan (W)

Co- editors
Dr. Sadhana Agrawal (Gwalior)
Pandurang Barkale (Mumbai)
Dashrath Kamble (Kalyan)
Bharat Gugane (Nashik)

Mahatma Gandhi Education and Welfare Society's
CENTRE FOR HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES, KALYAN (W)
www.mgsociety.in +91 8329000732 Email: chcskalyan@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

Full Journal Title: Chronicle of Humanities & Cultural Studies(CHCS)
Print ISSN: 2454-5503
Impact Factor 4.197 (IIJIF)
Frequency: Bimonthly / **Language:** Multi language / **Journal Country/Territory:** India
Publisher: Centre for Humanities & cultural Studies, A-102, Sanghavi Regency, Sahyadrinagar, Kalyan (W) (MS).
Subject Categories: Humanities & Cultural Studies

Chief Editor:
Dr Kalyan Gangarde, Director, Centre for Humanities and Cultural Studies, Kalyan (W)
Executive Editor
Dr Grishma Khobragade, Asst. Prof., Birla College, Kalyan (W)
Co- editors
Dr. Sadhana Agrawal, Asst. Professor, Maharani Laxmibai Govt. College of Excellence, Gwalior (M.P.) India
Pandurang Barkale, Asst. Professor, Dept of English, SNDT Women's University, Churchgate, Mumbai
Bharat Gugane, Asst. Professor, Bhosala Military College, Nashik, Maharashtra
Dr. Dashrath Kamble, Asst. Professor, S.B.College, Shahapur, Dist. Thane, Maharashtra
Dr. Sachin Bhumbe, Asst. Professor, P. N. Doshi College, Ghatkopar, Mumbai

EDITORIAL ADVISORY BOARD

Aju Mukhopadhyay,
a poet, author and critic, 8 Cheir Lodi Street, Pondicherry, India.
Dr R.T. Bedre,
Principal RSPMS' SPP College, Sirsala, Dist. Beed (MS)
Dr (Mrs.) Smita R. Nagori,
Head,PG Department of English, M.U.College Udgir, Dist. Latur, Maharashtra, India. Email: smita.lakhotiya@gmail.com
Dr Arvind Nawale
Head, Department of English, Shivaji Mahavidyalaya Udgir, Dist. Latur (Member, BoS in English, Former Member of the Senate, Faculty of Arts, SRTM University, Nanded
Dr Rajiv Kumar,
Associate Professor, Dept. of English, S.K.M University, Dumka, Jharkhand
Dr Kailash Nimbalkar,
Principal, S.B.College, Shahapur, Dist. Thane, Maharashtra, India. Email: nimbalkar_8@rediffmail.com.
Tsai-ching Yeh
Assistant professor, Department of English, National Taipei University of Technology. (Taivan)
Dr B. N. Gaikwad,
Vice Principal, N.G. Acharya and D.K. Marathe College of Arts, Commerce and Science , Chembur (East), Mumbai-400071
Dr Simon Philip,
Assistant professor, Department of Social Work, Voorhees College, Vellore
Dr Binu Anitha Josheph
Assistant professor, Department of English, Voorhees College, Vellore
Dr Chandrashekhar Kanase
Head, Department of Dramatics, SPP College, Sirsala, Dist Beed (MS)

EDITORIAL BOARD

Dr Mahendra Shinde, Associate Professor and Head, Department of English, N.M. Sailu, Dist. Parbhani, Maharashtra, India.
Dr Ramkishan Bhise, Assistant Professor, SIES Graduate School of Technology, Nerul, Navi Mumbai
Dr Asish Gupta, Asst. Professor, J. H. Govt. P. G. College, Betul MP.

Subscription Rates		
	Annual membership (Individual)	Rs. 1,800 (150 $ for foreigners) (Six Issues)
	Bi-annual Membership	Rs. 3,500 (250 $ for foreigners)
	Institutional annual membership	Rs. 2,200
	Institutional Bi-annual membership	Rs. 4,200

Those interested in making online transactions, the following details may be of use:

Bank Name	Account Name	Account Number	IFSC code
Canara Bank (Branch: New Marine Lines, Mumbai)	Centre for Humanities & Cultural Studies	1389101071921	CNRB0001389

DISCLAIMER: Academic facts, views and opinions published by authors in the Journal express solely the opinions of the respective authors. Authors are responsible for their content, citation of sources and the accuracy of their references and biographies/references. The editorial board or Editor in chief cannot be held responsible for any lacks or possible violations of third parties' rights.

Scanned with OKEN Scanner

21. महाराष्ट्र राज्य निवडणुक आयोगाच्या भूमिकेचा राजकीय अभ्यास 57
प्रा. गोंदकर तुकाराम दत्तात्रय

22. भारतीय प्रशासनातील नियोजन आयोगाचे महत्त्व : एक अभ्यास 59
प्रा. डॉ. गोरे ए. एल.

23. महाराष्ट्रातील मृदा : मृदानिर्मितीवर परिणाम करणाऱ्या घटकांचा भौगोलिक अभ्यास 61
प्रा. झिंजुर्डे दयानंद वामनराव

24. इंदिरा आवास योजनेचे स्वरूप आणि कार्यान्वयन : एक प्रशासकीय अध्ययन 63
डॉ. नंदकुमार नारायणराव कुंभारीकर

25. जायकवाडी प्रकल्प आणि मराठवाड्यातील सिंचन क्षेत्राचा आढावा: एक अभ्यास 65
प्रो.के.के.पाटील

26. काश्मीर समस्या : भारताची बदलती भूमिका 69
प्रा नागरगोजे.एम.के.

27. महिला सबलीकरण और बुद्ध तत्वज्ञान 71
डॉ. उत्तम छाजू राठोड

Scanned with OKEN Scanner

27.

महिला सबलीकरण और बुद्ध तत्वज्ञान

डॉ. उत्तम छाजू राठोड
सहयोगी प्राध्यापक,
नूतन महाविद्यालय, सेलू, ता. सेलू, जि. परभणी.

बौद्ध धम्म मानवता की कुंजी है। इसे अपनानेवाले सभी स्त्रि-पुरूष मे समता दिखाई देती है। आज भारत महासत्ता की ओर अग्रेसित है। जिसका मूल बौद्ध धम्म में दिखाई देता है। कल्पना किजीए अगर नारी आधुनिकता के युग मे गुलाम होती तो क्या आज भारत में महासत्ता का स्वप्न देखना संभव था? बौद्ध धम्म के स्थापना तक और आज भी भारत में दो विचारधाराए हमेशा एक दूसरे से टकराती दिखाई देती है। नारी को गुलाम बनानेवाली बम्मणवादी सामंती विचारधारा तो दूसरी और नारी को सम्मान देनेवाली बुद्ध परंपरा। इतिहास गवाँह है कि, आज नारी को बौद्ध धम्म ने सम्मान देकर उसे उच्च स्थानों पर विराजित करके बुद्ध ने पहिली बार महिलाओं के हित में अपने संघ में स्थान देकर उसे सम्मान्वित किया है।

सामंतवादी और साम्राज्यवाद शक्तियाँ अर्थशोषन के साथ-साथ स्त्रि शोषन को भी महत्व देती हुई नजर आती है। इतिहास इन बातो का गवाँह है कि, नारीओं को हासिल करने के लिए भी इस देश में युद्ध लडे गये। स्त्रियों को हासिल करके उसे बंदी बनाया गया। सामंतवादी युग तो सुरा और सुंदरीओंसे भरा हुआ नजर आता है। स्त्रि जाती के बाह्य सौंदर्यपर रिझनेवाला कवि भी उसके अंतरंग को नहीं समज सका। इस व्यवस्था में स्त्रि अपना जीवन अबला बनकर ही अर्जित करती हुई दिखाई देती है।

"अबला जीवन हाय तेरी यही कहानी
आँचल में है दूध और आँखों मे पानी।"

मध्ययुग तक नारी की दशा ऐसी बनी हुई थी। नारीओं का तो व्यापार भी इस समय किया जाता था। जिसकी खाद मनू और तुलसी की परंपराएँ देती नजर आती है। तो इसके खिलाफ बुद्ध तत्वज्ञान में प्रतिक्रांती की उपज दिखाई देती है।

गौतमबुद्ध स्त्रियों के सम्मान में खडे दिखाई देते है। बुद्ध ने सभी जातपात की उपेक्षित और दुःखी स्त्रियों को अपने संघ में स्थान देकर उन्हे मानवी समानता प्रदान की। जबकी वैदिक परंपरा से लेकर उसके उपरांत स्त्रियों को गुलामी बक्साती है। तो दूसरी आम्रपाली जैसी नृत्यांगना को बुद्ध धम्म में दिक्षा देना एक क्रांतिकारी पहल मानी जाती है। जिस समाज ने नारी को उपभोग की वस्तु मानकर उसकी घृणा की। उसी स्त्रियों को अपने संघ में प्रवेश देकर बुद्ध ने दुनिया के इतिहास में गौरव की बात की है। वर्तमान समय का पुरूष अपने पत्नी पर अन्याय अत्याचार करता दिखाई देता है। उसे अपने घर में ही कैद करता है। वहाँ गौतम बुद्ध पत्नी यशोधरा को बौद्ध धम्म की दिक्षा देकर अपने संघ में सामील करते है। गौतम बुद्ध अपने बौद्ध धम्म का प्रचार करने के लिए गाँव-गाँव, नगर-नगर यात्रा करते थे। उस समय में दुःखी प्रताडीत स्त्रि जो उनके संपर्क में आती वे उसका निवारण करते थे। इसका परिणाम यह हुआँ की, स्वयं नारियाँ अत्याचार के खिलाफ खडी हुई। जीस समाज में नारी को भोग समान इस्तमाल किया जाता था वहाँ बुद्ध 'स्वयं अत्त दिप भव' का संदेश देकर नारीओं को स्वयंप्रकाशित होने का संदेश देते है। जो दुनिया के इतिहास में बुद्ध ने सभी लोगों के लिए मानवतापूर्वक जीवन जीने के लिए क्रांति की है।

"ढोर गवाँर शुद्र पशु नारी
ये सब ताडन के अधिकारी"

ऐसी भूमिका तुलसीदास ने लेकर मनुवादी धून बजाई है। जिसने गौतम बुद्ध के युग से निकलति नारी चेतना का अवरोध किया। आर्यों के आगमन पश्चात यहाँ के मूल निवासी नारी के साथ संसार करने लगे। उसी समय से ही नारी गुलाम बनती हुई नजर आती है। इतना ही नही तो उसी के साथ अन्याय अत्याचार, बालविवाह, सतीप्रथा जैसी अत्याचारी भूमिका रही है। जिसका फल आज की दहेज प्रथा और भ्रूण हत्या है। वास्तव में गौतम बुद्ध का तत्वाज्ञान हर तरह के गैरबराबरी और शोषण का विरोध करते है।

रामास्वामी नोयकर का कहना था कि, 'भारत में जब तक ईश्वर का अस्तित्व रहेगा, तब तक छुआ छुत रहेगी।' वैसेही भारत में जब तब आर्य बम्मन रहेंगे तब तक स्त्रि-पुरूष असमानता दिखाई देंगी। बुद्ध तत्वज्ञान भारत

Scanned with OKEN Scanner

भूमी की उपज है। जो भारत में भारतीयों को सशक्त बनाने में विश्वास प्रकट करता है॥ बुद्ध धम्म ईश्वर को नकारता है॥ जहाँ ईश्वर के नाम पर धार्मिक और सामाजिक पाखंड निर्माण किए जाते है। वैदिक धर्म ईश्वर की आड में नारी का शोषण करता हुआ दिखाई देता है। लेकीन बुद्ध ने अपने जीवन भर यह संदेश दिया है कि, हम स्त्रियों का शोषण नही करेंगे। गाँव-गाँव में आज जो महिला मंडळ दिखाई दे रहे है, जिन्होंने आर्थिक स्वावलंबन का रास्ता अपनाया है जिसका मूल स्त्रोत बौद्ध धम्म में दिखाई देता है। वैदिक युग में नारी को स्वतंत्रता नही थी, सम्मान नही था। उसके उपर अन्याय अत्याचार करता हुआँ समाज दिखाई देता है। वही पर बौद्ध धम्म स्त्रियों को आत्मसम्मान देकर उनकी स्थिति, दशा, सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

"पिता रक्षति कौमार्या, भ्रता रक्षति यौवने
रक्षन्ति स्वाविरे पुत्रा, न स्त्री स्वातंत्र्य महती।"

जिसका अर्थ है नारी को बाल्यावस्था में पिता, यौवन में पती और बुढापे में बेटे पर निर्भर रहना पडता था। जो नारी के स्वतंत्रता पर जादती है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरजी, 'हिंदु स्त्रियों की उन्नति और अवनति' इस ग्रंथ में लिखते है कि, हिंदुओं ने स्त्रियों के साथ जो अमानवीय तरीके से बरताव किया जिसकी विश्व में कोई मिसाल नही है। इसलिए बाबासाहब हिंदु कोडबिल के व्दारा गौतम बुद्ध के विचारों की पहल करते हुआ नारी को सम्मान की जिंदगी बक्सते है।

समता, स्वातंत्र्य, बंधुता का मूलमंत्र भारत में गौतम बुद्ध ने ढाई हजार वर्ष पूर्व रोपा था। जो उनके पश्चात महात्मा ज्योतीबा फुले, सावित्रीबाई फुले जैसे और भी आदी फल है। नारी और अछुतो की गुलामी नष्ट करने की कृतिशिल भूमिका फुलेजी ने की थी। भारत में रहनेवाले सभी जाती, धर्मो को समानता, स्वातत्र्य मिलाने के लिए डॉ. बाबासाहब आंबेडकरजी ने २५ डिसेंबर १९२७ को 'मनुस्मृति' को जलाकर पुरा किया। गौतम बुद्ध के धम्मों में स्त्रि-पुरूष समतावादी विचारधारा होने के कारण १४ अक्तुबर १९५६ को डॉ. बाबासाहब आंबेकरजी भारतभूमी में बुद्ध धम्म पुर्नजीवित किया है।

निष्कर्ष:

गौतम बुद्ध की मानवमुक्ती की विचारधारा स्त्रीमुक्ती की पैरवी करता हुआँ दिखाई देता है। जिससे प्रभावित होकर भारत में स्त्रीयाँ बौद्ध धम्म में आकर्षित हो गयी थी। सम्राट अशोक भी बौद्ध विचारधारा से प्रभावित होकर बौद्ध धम्म के प्रचार-प्रसार के लिये अपनी कन्या संघमित्रा को विदेश भेजते है। गौतम बुद्ध के धम्म से चेतित स्त्रियों को रोकना इतना आसान नही था। वस्तुतः आज का स्त्रीवाद गौतमबुद्ध के स्त्रीवादी विचारधारा की अग्रज, उन्नत कडी है। जिसका बीज बुद्ध धम्म में दिखाई देता है।

संदर्भः

१) डॉ. बी. आर. आंबेडकर, हिंदु स्त्रियांची उन्नती आणि अवनती, सुगत प्रकाशन, वैशाली नगर, नागपूर, १४ एप्रिल २००४.
२) जी. प्राजक्त, शोध कपिल वस्तूचा, चैत्य. प्रकाशन, एन ९, सिडको, औरंगाबाद, २००१.
३) सौ. अरूणा प्र. मेश्राम, थेरी गाथेतील स्त्रि प्रतिमा, संकेत प्रकाशन, नागपूर, १५ ऑक्टोबर २००४.
४) डॉ. अनिल सूर्या, प्राचीन अर्वाचीन भारतीय स्त्रि, सुगावा प्रकाशन, पुणे, १५ ऑक्टोबर २०१०.
५) चां. भ. खैरमौडे, डॉ. आंबेडकर आणि हिंदु कोडबिल, सुगावा प्रकाशन, पुणे, २००२.
६) वसंत राजस, स्त्रीयांचे उद्धारक डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, आनंद प्रकाशन, जयसिंगपुरा, औरंगाबाद, १४ जानेवारी २००५.
७) वि. एन. सिंह, भारत के सामाजिक आंदोलन, रावत प्रकाशन, जयपूर, २००५.

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner